Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **28.04.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

जर्मनी के दौरे के बीच मस्जिदों के उद्घाटन तथा आधार शिला के अवसर पर हुज़ूर-ए-अनवर के ज्ञान वर्धक सम्बोधन
हुज़ूर-ए-अनवर के सम्बोधनों का मेहमानों पर गहरा प्रभाव तथा उनकी ईमान वर्धक अभिव्यक्ति
विश्व युद्ध का बढ़ता भय तथा दुआ की प्रेरणा, परमाणु युद्ध के बुरे प्रभाव से बचने के लिए होम्योपेथी की दवाई को प्रयोग करने की प्रेरणा
अलजज़ायर और पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआओं का विशेष अभियान

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जब भी मुझे प्रैस के प्रतिनिधि अथवा ग़ैर मस्लिमों के साथ बैठने का अवसर मिलता है, प्रश्नोत्तर अथवा बात चीत का अवसर मिलता है, किसी न किसी तरीक़े से, सीधे अथवा किसी माध्यम से, वे यह प्रश्न अवश्य पूछते हैं कि इस्लाम के बारे में जो भय है दुनया में, इसका क्या कारण है तथा यह किस प्रकार दूर होगा? कुछ लोग खुलकर तथा कुछ ढके छिपे शब्दों में यह कह देते हैं और कहना चाहते हैं कि सम्भवतः इसका कारण इस्लामी शिक्षा है। अतः इस बार भी जर्मनी में एक पत्रकार ने यह सवाल किया कि जर्मनी में इस्लाम से भय बढ़ रहा है, इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यही प्रश्न जो है, हमारे तबलीग़ के रास्ते खोलता है कि यह भय यदि बढ़ रहा है तो कुछ मुसलमान कहलाने वाले गुटों अथवा लोगों का इस्लाम के नाम पर अनुचित व्यवहार करना तथा आतंकी आक्रमण के कारण होता है तथा पूर्णतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी के अनुसार है और ऐसे समय में मसीह मौऊद व महदी मअहूद के आगमन की भविष्य वाणी है जिन्होंने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा विश्व में फैलानी थी और हमारे ईमान के अनुसार अहमदिया जमाअत के संस्थापक वही मौऊद हैं जिनके बारे में पेशगोई की गई थी। अतः हमारी प्रतिक्रिया तो उनकी शिक्षानुसार है कि जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दी कि शांति और सद्भावना की शिक्षा को फैलाओ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि हर प्रकार का कट्टर वाद और आतंक वाद तथा अत्याचार, इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध है। आप अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि जब से दुनया पैदा हुई है समस्त देशों के सज्जन पुरुष यह साक्ष्य देते आए हैं कि ख़ुदा के आचरण का अनुसरण करना, मानव जाति के स्थाइत्व के लिए एक अमृत है। अल्लाह तआला के जो आचरण हैं, अल्लाह तआला की जो विशेषताएँ हैं, वे धारण करो तभी मानव जीवन का बचाव है और इंसानों का आध्यात्मिक तथा शारीरिक जीवन इस बात को चाहता है कि वह ख़ुदा के समस्त पवित्र आचरणों का अनुसरण करे, जो स्थाइत्व का स्रोत है।

अतः अल्लाह तआला जो सलामती का स्रोत है वह एक मुसलमान से यही चाहता है तथा यही क़ुर्आन-ए-करीम का आदेश है कि उसके विशेषणों को अपनाया जाए, उसके आचरण को अपनाया जाए। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ को पहले इसी आयत से शुरु किया जो सूरः फ़ातिहः में है कि اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ अर्थात वह सच्चा और कामिल ख़ुदा जिस पर ईमान लाना प्रत्येक बन्दे का कर्त्तव्य है, वह रब्बुल आलमीन है। उसका पालनहार होना किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं है और न किसी विशेष युग तक तथा न किसी विशेष देश तक बल्कि वह सारी क़ौमों का रब्ब है और समस्त युगों का पालनहार है तथा समस्त स्थानों का रब्ब है और समूचे देशों का वही रब्ब है और समस्त कृपाओं का वही स्रोत है और प्रत्येक आध्यात्मिक एवं शारीरिक शक्ति उसी से है और उसी से सारी सृष्टि का पालन पोषण होता है तथा प्रत्येक अस्तित्व का वही सहारा है।

अतः यही है वह ज्ञान तथा विवेक जो क़ुर्आन-ए-करीम की शिक्षा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें प्रदान की है तथा यही वह साधन है जो विश्व में अमन व शांति फैलाने के लिए अनिवार्य है और यही वह बात है जो दुनया में सन्धि का

आधार बन सकती है और यही वह सन्देश है जिसको अहमदिया जमाअत के लोग विश्व के प्रत्येक छोर तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं तथा प्रयास करना चाहिए। अतः यदि कुछ लोगों के कुकर्म अथवा उनके काम इस्लाम के नाम पर दुनया में आतंक एवं उपद्रव फैलाने का प्रयास करने वाले हैं तो यह उस शिक्षा के कारण नहीं जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दी है अपितु उस शिक्षा से दूर होने के कारण है। इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए दूत और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को न मानने के कारण से है।

अतः हम जब इस शिक्षा के प्रकाश में दुनया को अमन, बन्धुत्व, सद्भावना और प्रेम का मार्ग दिखाते हैं तो अधिकांशतः सहसा सज्जन प्रकृति के ग़ैर मुस्लिमों के मुंह से ये शब्द निकलते हैं कि इस्लाम तो बड़ी सुन्दर शिक्षा देता है। अतः इस बात की अभिव्यक्ति मेरे जर्मनी के इस दौरे के समय भी हुई।

Waldshut नगर में मस्जिद बैतुल आफ़ियत के उद्घाटन समारोह के अवसर पर एक डाक्टर कहने लगे कि मुझे पूरे जीवन यह जिज्ञासा रही कि मुझे शांति प्रिय मुसलमान कहीं मिल जाएँ। आज आप लोगों ने मेरी इस इच्छा को पूरा कर दिया, मैं अपने आपको को बड़ा भाग्य शाली अनुभव कर रहा हूँ कि आज मुझे ये लोग मिल गए।

इटली से सम्बंध रखने वाली एक महिला भी आई हुई थीं, अपने मित्र के साथ प्रोग्राम में शामिल हुईं। उसने बताया कि मेरा दोस्त इस प्रोग्राम में शामिल होने से घबरा रहा था क्यूँकि इस्लाम के विषय में उसके मन में कुछ कुधारणाएँ थीं। परन्तु प्रोग्राम में शामिल होने तथा अहमदिया जमाअत के इमाम का सम्बोधन सुनने के पश्चात उसका इस्लाम के विषय में दृष्टि कोण बदल गया। यहाँ तक उसने तुरन्त अपने मोबाईल से अपने किसी दूसरे मुसलमान दोस्त को मैसेज किया कि आज मुझे पता लगा है कि तुम्हारा धर्म कितना सुन्दर है।

फिर एक मुसलमान ने कहा- यहाँ आपकी संगति से मुझे भी कुछ बरकतों को समेटने का अवसर मिला और यहाँ आना मेरे लिए सम्मान की बात है। यदि आज मैं यहाँ न आता तो निःसन्देह एक बड़ी बात से वंचित रह जाता। अहमदिया जमाअत के द्वारा मुझे वास्तविक इस्लाम का परिचय प्राप्त हुआ, जो टी वी में आतंक एवं घृणा वाले इस्लाम के पूर्णतः विरुद्ध है और यहाँ से मुझे अमन और स्नेह मिला है और केवल यही नहीं कि ज़बानी ही अमन व प्रेम मिला है बल्कि व्यवहारिक रूप से भी ऐसे इंसान मिले हैं जो घृणा नहीं चाहते। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः प्रत्येक अहमदी का जो व्यक्तिगत कर्म एवं व्यवहार है, वह भी एक गुप्त तबलीग़ कर रहा होता है।

हमारे सुलझे हुए अहमदी बच्चे भी किस प्रकार माहौल पर अपना प्रभाव डाल रहे होते हैं इसकी अभिव्यक्ति भी हमें दिखाई देती है। अतः एक महिला मेहमान ने अपने अनुभव अभिव्यक्त करते हुए कहा कि मैं आपकी आभारी हूँ। मेरे बच्चों की अहमदी बच्चों से दोस्ती है। जबसे उनकी अहमदी बच्चों से दोस्ती है मैंने उनमें एक सकारात्मक तथा अच्छा बदलाव देखा है। इस कारण से मैं जानना चाहती थी कि आपकी शिक्षा क्या है। आज यहाँ आने के बाद मुझे पता चला कि मेरे बच्चे अच्छे दोस्तों के साथ हैं तथा सुरक्षित हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस प्रकार यह गुप्त तबलीग़ जो बच्चों के कारण हो रही है, यह अहमदी माता-पिता पर और अधिक दायित्व डाल रही है कि अपने बच्चों के प्रशिक्षण का स्तर बढ़ाते रहें तथा उनके लिए दुआएँ भी करें ताकि सदैव अहमदी बच्चे दूसरों पर नेक प्रभाव डालने वाले हों तथा माहौल की बुराईयों से बचते रहें। यही नेक प्रभाव जो हैं, भविष्य में इन्शाअल्लाह तआला, वास्तविक इस्लाम के पैग़ाम को फैलाने में अपनी भूमिका निभाएंगे। वही बच्चे जब इन बच्चों के साथ खेलते हुए बड़े होंगे, यदि ये बच्चे अपनी प्रस्थितियों को इस्लाम के अनुसार ढाले रखेंगे तो इन्शाअल्लाह तआला इन्हीं बच्चों में से जो ग़ैर मुस्लिम बच्चे हैं, अनेक अहमदियत में शामिल होने वाले होंगे।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक अन्य नगर आगस बर्ग मस्जिद बैतुन्नसीर के उद्घाटन के बारे में फ़रमाया- इसी प्रकार Augsburg दूसरा नगर है जहाँ मस्जिद का उद्घाटन हुआ। यह नगर बड़ा होने के कारण यहाँ से बहुत पढ़े लिखे लोग भी आए हुए थे, राजनेता भी आए हुए थे। एक अतिथि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बड़ा ही सुन्दर सन्देश है जो पहुंचाया जा रहा है। मेरी यह अभिलाषा है कि आपका यह सन्देश इस्लामी देशों के अधिकांश लोगों तक पहुंचे। इसके द्वारा अधिक शांति की स्थापना होगी। कितना अच्छा हो कि मुसलमान लोग भी, मुस्लिम देश भी इस बात को समझने वाले हों कि आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ के द्वारा जो इस्लाम का पुर्नोद्धार होना है उसमें उसके साथ शामिल होकर उनके सहयोगी बनें, न कि रोकें खड़ी करें तथा विरोध और दुश्मनियाँ पैदा करें।

एक जर्मन स्कूल की अध्यापिका ने अपने अनुभव अभिव्यक्त करते हुए कहा- मैं अपने स्कूल के बच्चों को इस्लाम के विषय में उनके प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकती थी क्यूँकि मीडिया में जो कुछ आता है वह इस्लाम के विरुद्ध होता है। आज इस प्रोग्राम में जमाअत अहमदिया के इमाम के सम्बोधन के द्वारा मुझे इतनी अधिक सामग्री मिल गई है कि मैं अपने विद्यार्थियों को अब इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से परिचित करा सकती हूँ।

फिर एक महिला ने कहा कि आपके ख़लीफ़ः की बातें सुनकर मेरे दिल पर गहरा प्रभाव हुआ है। मैं नहीं जानती थी कि इस्लाम की शिक्षा इतनी सुन्दर एंव शीतल है। ये बातें सुनकर मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि इतनी सुन्दर शिक्षा के होते हुए इस्लाम इतना बदनाम क्यूँ हो गया है? मैं दुआ करती हूँ कि आपका इस्लाम फैले तथा सब लोगों तक पहुंचे।

आगस बर्ग युनीवर्सिटी के एक प्रौफ़ैसर कहते हैं कि जमाअत अहमदिया के इमाम ने जो कहा, वह यदि वास्तव में आपका सन्देश है तो आपको बड़ी सफलता प्राप्त होगी। ये इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने यूनीवर्सिटी में प्रदर्शनी लगाने का निमन्त्रण दिया तथा इस बात की इच्छा जताई कि जमाअत लोगों में अधिक ख्याति प्राप्त करे तथा आपका का सन्देश प्रत्येक को पहुंचे।

एक महिला डाक्टर ने कहा कि गहराई तक प्रभाव छोड़ने वाला सम्बोधन था विशेषकर मुहब्बत और अमन का सन्देश। यदि हममें से प्रत्येक अपने पड़ौसियों का ध्यान रखने वाला बन जाए, जैसा कि इस्लाम की शिक्षा है तो दुनया बड़ी सुन्दर हो जाए।

फिर एक महिला ने कहा कि पड़ौसियों के अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया, यह विशेष रूप से बड़ा अच्छा लगा। यदि हम इस पैग़ाम के एक भाग के अनुसार ही सक्रिय हो जाएँ तो दुनया पहले से बढ़कर शांति पूर्ण एवं समृद्ध हो जाए।

पुलिस से सम्बंध रखने वाले एक तुर्क मेहमान ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि आज का समारोह तथा आपके पैग़ाम से प्रभावित हुआ हूँ तथा ऐसा सुसंगठित प्रबन्ध और कहीं देखने को नहीं मिलता, मैंने आपके प्रबन्धन से बहुत कुछ सीखा है।

एक सीरियन दोस्त ने अपने प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आपने अन्य मुसलमानों की अपेक्षा बड़े प्रभाव पूर्ण रंग में इस्लाम की शिक्षाएँ पेश की हैं। अब मैं और अधिक जानकारी प्राप्त करुंगा और सम्भवतः एक दिन मैं स्वयं भी बैअत करके इस जमाअत में शामिल हो जाऊँ। कहते हैं यहाँ आने से पहले मैंने सुना था कि अहमदियों का क़ुर्आन और है किन्तु आज यह बात भी मेरे सामने झूठी हो गई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मार्ग बर्ग एक नगर है, वहाँ मस्जिद की आधार शिला रखी गई। वहाँ के आयोजन में शामिल होने वाली एक महिला ने कहा कि पड़ौसियों के अधिकारों के विषय में पैग़ाम ने मुझे बड़ा प्रभावित किया है तथा एक ईसाई के रूप में मेरी इच्छा है कि ईसाईयत भी इस शिक्षा को ग्रहण करे।

फिर एक मेहमान ने कहा कि महिलाओं का जो स्तर पेश किया है आपने सम्बोधन में, वह अत्यंत सुन्दर धार्मिक शिक्षा है तथा आपके यहाँ पुरुष और महिलाओं की जो प्रतिष्ठा एवं अधिकारों में संतुलन है, वह मुझे बड़ा पसन्द आया।

लॉर्ड मेयर ने अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हुए कहा कि इस बात का खेद है कि मुसलमानों पर इतने अधिक अनुचित आरोप लगाए जाते हैं कि मुसलमानों को अपने जवाब में प्रमाण देने पड़ जाते हैं जबकि यदि कोई पश्चिमी देश का निवासी अथवा ईसाई कोई अत्याचार करे, जैसे नार्वे में एक हत्यारे ने ईसाईयत के नाम पर हत्याएँ की थीं तो कोई भी नहीं कहता कि उस धर्म का दोष है।

एक अतिथि महिला मिसेज़ जूलिया कहती हैं- बड़े अच्छे रंग में आयोजित होने वाले इस समारोह में भाषण का यह बिन्दु मुझे बड़ा अच्छा लगा कि यदि बन्दों के अधिकार न दिए जाएँ तो ख़ुदा की इबादत का कोई औचत्य नहीं। कहती हैं- मेरा यहाँ आने से पहले यही विचार था कि इस्लाम कट्टर वाद एवं संकीर्ण सोच की शिक्षा देता होगा किन्तु आज के आयोजन ने मेरे मस्तिष्क को इस्लाम के विषय में नकारात्मक विचारों से शुद्ध कर दिया है और मैं इस्लाम की शांति और अमन की शिक्षा से सुन्दर रंग में परिचित हुई हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के उद्घाटन तथा आधार शिला रखने के अवसर पर टी वी, रेडियो तथा समाचार पत्रों के माध्यम से प्रसार का वर्णन किया और फ़रमाया कि इसके द्वारा करोड़ों लोगों तक अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैं जब दौरे पर जाता हूँ तो जिस देश में जाऊँ उस देश के कुछ हालात बयान कर देता हूँ। यहाँ यू.के. में भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अच्छा काम हो रहा है। यहाँ भी विस्तृत रूप में इस्लाम की वास्तविक शिक्षा फैलाने का काम हो रहा है। विभिन्न संगठन भी काम कर रहे हैं, जमाअत का लबलीग़ का विभाग भी कर रहा है अल्लाह की कृपा से। फ़रमाया- उदाहरणतः यह शांति समारोह हुआ है जो पिछले दिनों, पिछले महीने मार्च में, इसके

माध्यम से भी विशाल रूप में न केवल यू.के. में बल्कि पूरे विश्व में इस्लाम का सन्देश पहुंचा है। हुज़ूर-ए-अनवर ने शांति समारोह में शामिल होने वाले कुछ अतिथियों के अनुभव बयान फ़रमाए। फ़रमाया- एक चर्च की वार्डन थीं, वह यहाँ आई हुई थीं, पीस सिम्पोज़ियम में। कहती हैं- बड़ा रूचि पूर्ण एवं सशक्त सन्देश था, एकता का सन्देश था, जिसकी आज के समाज को आवश्यकता है। मुझे यह बात भी बड़ी पसन्द आई जो जमाअत के इमाम ने क़ुर्आन-ए-करीम की आयत पेश करके बयान की है कि विभिन्न धर्मों के पेशवाओं को आपस की समानताओं पर एकमत होना चाहिए। इबादत का यह अर्थ भी मुझे बड़ा पसन्द आया कि पाँच समय की इबादत अनिवार्य है परन्तु यदि इसके साथ बन्दों की सेवा नहीं तो इबादत का कोई लाभ नहीं।

एक नर्स थीं फ़ियोना साहिबा, कहती हैं कि जमाअत के इमाम ने दिखाया कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसको उचित रूप से समझा नहीं गया तथा आतंक वादी अनुचित रूप से इस्लाम के पीछे छिप रहे हैं। फिर एक जी पी और चर्च के लीडर भी हैं, वे कहते हैं कि सम्बोधन मैंने सुना, एक मार्ग दर्शक प्रकाश की भांति था जिसने दिखाया कि इस्लाम एक महा शांति वाला धर्म है।

एक कम्पनी की डायरैक्टर साहिबा कहती हैं- हथियारों के व्यापार के सम्बंध में ख़लीफ़ः की बातें मुझे बड़ी पसन्द आईं। यह एक ऐसी चीज़ है जहाँ आकर हमारे आचरण समाप्त हो जाते हैं तथा व्यापारिक लाभ को प्राथमिकता दी जाती है। फिर कहती हैं दुनया के भविष्य के विषय में जमाअत अहमदिया के इमाम के शब्दों तथा उनकी दुआओं को सुनकर मैं बड़ी भावुक हो गई थी कि हम अपने पीछे एक अच्छी दुनया छोड़ जाएँ। इसके साथ वे चिंतित भी थे कि कहीं हम अपने पीछे विकलांग बच्चों की दुनया न छोड़ जाएँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यहाँ जमाअत को भी ध्यान दिला दूँ कि आजकल दुनया के हालात अत्यधिक बिगड़ते चले जा रहे हैं और बहुत दुआ की आवश्यकता है। बड़ी शक्तियाँ भी और छोटे देश भी बुद्धि हीन यौद्धा बन रहे हैं। जो लोग पहले बड़े आशावादी थे, उनके लीडर और राजनेता तथा विशेषज्ञ, कि विश्व युद्ध को दूर की बात समझते थे, वे भी कहने लग गए हैं कि इस सम्भावना को रद्द नहीं किया जा सकता, बल्कि युद्ध की सम्भावनाएँ अधिक हैं। और फिर युद्ध में जैसा कि अमरीका तथा कोरिया की आजकल हो रही है समस्या, यद्यपि चीन अब भूमिका निभा रहा है कि किसी प्रकार निवारण हो जाए समस्या इनकी। एक दूसरे को परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे हैं ये लोग। इसी प्रकार मुसलमान लीडर भी अत्याचार कर रहे हैं तथा यहाँ भी गुटबन्दी हो रही है। इस प्रकार युद्धों के मैदान विस्तृत हो रहे हैं। अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला इनको बुद्धि प्रदान करे और इसी प्रकार जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने एक बार परमाणु युद्ध में रोक थाम के लिए एक नुस्खा भी होमियो पेथी का बताया था, इसको भी जमाअत को चाहिए कि अब प्रयोग कर ले, कम से कम छः सप्ताह के लिए। एक बार एक दवाई, फिर दूसरी दवाई, इसकी घोषणा हो जाएगी, कारसीनो सैनोरियम बर्माईड। अच्छा इसी प्रकार एक अन्य विशलेषण भी पेश कर दूँ।

पुर्तगाल के एक प्रौफ़ैसर डा. पोलो मारोईस कहते हैं कि आज प्रमाणित हो गया आपकी बातें सुनके कि न्याय और शांति पर्याय वाची शब्द हैं जिनका एक ही अर्थ है तथा एक के बिना दूसरे की प्राप्ति सम्भव नहीं। अतः कहते हैं- दुनया में न्याय की कमी है जिसके बिना शांति होना सम्भव नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अनेक मेहमानों की ईमान वर्धक अभिव्यक्तियाँ बयान फ़रमाईं तथा मीडिया के माध्यम से विस्तृत रूप में पीस सिम्पोज़ियम के प्रसार और इस्लाम की तबलीग़ का वर्णन किया। फिर फ़रमाया- सोशल मीडिया के द्वारा भी 3.8 मिलयन की कवरेज हुई। फ़रमाया- जिस रूप में जमाअत का पैग़ाम फैल रहा है, हमारा विरोध भी बढ़ रहा है तथा विशेष रूप से मुसलमान देशों में विरोध बढ़ रहा है। अलजज़ायर में पिछले कुछ महीनों से विशेषकर अत्यधिक विरोध है तथा यह बढ़ता चला जा रहा है, उनके बारे में दुआ के लिए भी कह चुका हूँ।

अलजज़ायर के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, फिर पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ करें, फिर और दुनया में जिन देशों में अहमदियत के विरुद्ध अधिक जोश उबल रहा है, वहाँ के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला सबको सुरक्षा में रखे और विशेष रूप से अलजज़ायर के जो अहमदी हैं, वे अधिक पुराने अहमदी नहीं हैं अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ संकल्प भी बनाए तथा उनकी कठिनाईयों को शीघ्रता से दूर भी फ़रमाए।